सप्तम अध्याय

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में तुलसी के काव्य का मूल्यांकन एवं उपसंहार

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में तुलसी के काव्य का मूल्यांकन एवं उपसंहार

सम्पूर्ण शोध के आधार पर कहा जा सकता है कि तुलसी का व्यक्तित्व बहुआयामी है। इतिहास के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। तुलसीदास जी ने अपने साहित्य के माध्यम से तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्था, सामाजिक व्यवस्था, धार्मिक व्यवस्था आदि का वर्णन किया है जो अपने आप में महत्वपूर्ण है। निःसंदेह तुलसीदास जी मूलतः भक्त हैं, परन्तु भक्त होने के साथ–साथ वे उच्च कोटि के विचारक भी हैं। तुलसीदास का व्यक्तित्व बहुआयामी था। तुलसीदास के चित्रों की आकृतियों तथा उनकी निजि कृतियों और रचित ग्रन्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गोस्वामी तुलसीदास जी का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली रहा होगा। गोस्वामी जी का आविभार्व ऐसे युग में हुआ जब पठानों अर्थात् लोदी वंश के शासन का अंत हो रहा था और मुगल शासक अपनी जड़ मजबूत कर रहे थे। तुलसी अपने युग से प्रभावित हुए और उन्होंने अपने युग को भी प्रभावित किया। तुलसीदास जी जैसे महापुरूष के विचार, अनुभव और युग का चेतन मानव समाज को अनन्तकाल तक प्रभावित एवं प्रेरित करता रहेगा। तुलसीदास का महान व्यक्तित्व अपने युग से अटूट संबंध ा रखता है। मर्यादा तुलसीदास के व्यक्तित्व की ज्योति थी। तुलसीदास जी ने अपने दीर्घ जीवन में वृहत साहित्य का लेखन किया जिसमें 13 रचनायें प्रमाणिक मानी गयी है जिनमे रामचरित्रमानस, विनयपत्रिका, कवितावली,गीतावली,दोहावली, आदि मुख्य हैं। गोस्वामी जी ने आदि कवि बाल्मीकि की रचना 'रामायण' को अपनी रामकथा का आधार माना है। बाल्मीकि के विचारों एवं उनके कथा विन्यास के स्वरूप से तुलसी जी प्रभावित दिखाई पड़ते हैं।

हिन्दी साहित्य की दृष्टि से मुगल–युग को सुवर्णोय काल माना जाता है। हिन्दी साहित्य का यह साहित्य प्रधानतया धार्मिक था। तुलसी का साहित्य श्रेष्ठ राज्य का स्वरूप प्रस्तुत करता है। तुलसी साहित्य में राजनीति सर्वत्र भक्ति एवं साहित्यिक के झीने आवरण में से झाँक रही हैं। रामचरित्रमानस तुलसी के राजनीतिक विचारों की अनमोल निधि है, जिसमें आदि, मध्य, अंत अर्थात् बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और उत्तरकाण्ड को भक्ति के साथ–साथ राजनैतिक स्वरूप की व्याख्या कहें तो अतिश्योक्ति न होगी। मानस में भक्ति तो है ही, इसके साथ ही राजनैतिक वातावरण भी दृष्टिगोचर होते हैं। मानस में राजनीति भक्ति में विलीन हो गयी है। इसके साथ ही नीति और राजनीति दोनों भक्ति से परिचालित हुए हैं। रामरत्न भटनागर के अनुसार–' मानस में राजनीति का स्थान धर्म ने ले लिया है, जो अपने आप में तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि जहाँ–जहाँ मानस में राजनीति के सिद्धांत आये हैं, वे प्रसागिंक हैं और इसका कारण यही है कि रामचन्द्र राजा भी थे। गोस्वामी जी ने उनके आदर्श राज्य का वर्णन किया है और इसी प्रसंग में उन्हें राजनीतिक, सामान्य सिद्धांत भी रखने पड़े हैं। पाठक तुलसीदास जी की अनूठी काव्य कल्पना, भाषा पर अनन्य अधिकार के साथ–साथ राजनीति की विशुद्ध व्याख्या देख विस्मय हो जाना है। प्रस्तुत शोध कार्य यह सिद्ध करना है कि तुलसी एक साथ सबकुछ हैं वह भक्त हैं, कवि हैं। समाज सुधारक हैं, दार्शनिक है और उच्च कोटि के राजनीतिक भी हैं।

धर्म प्रधान भारत के प्रत्येक सांस्कृतिक क्षेत्र में धर्म की प्रमुखता रही है। यहाँ सदा यह विश्वास रहा है कि सब प्रकार की सम्पत्तियाँ धर्मशील व्यक्ति के पास ही जाती हैं। प्राचीन भारत में भी यही धारणा थी कि मध्यकालीन भारत में भी यही धारणा थी और आज तक भी यही है। तुलसीदास ने अपने साहित्य में जिस समन्वित धर्म का रूप वर्णित किया है, उसकी उस समय अत्यन्त आवश्यकता थी। उनके समस्त साहित्य में विशेषतः भक्त स्वभाव वर्णन, धर्मरथ

वर्णन, स्वामी, राजा–प्रजा, आदि सम्बन्धों का सजीव चित्रण किया है। तुलसी साहित्य में हमें विभिन्न स्थानों पर धर्म का उल्लेख मिल जाता हैं तुलसी के अनुसार धर्म की परीक्षा संकट में होती है कि व्यक्ति धर्म में कितनी आस्था रखता है। इनके अनुसार धर्म के लिए श्रृद्धा–विश्वास का होना भी वांछनीय है, धर्म विश्वास पर ही आधारित है। तुलसी काव्य में परोपकार के सर्वश्रेष्ठ धर्म कहा गया है एवं दूसरों का हित ही परोपकार कहलाता है। गोस्वामी जी ने नारी धर्म की भी सफल स्थापना की है और समाज के लिए उसे अतिशय उपदेश माना है। इनके अनुसार रीति, प्रीति ओर धर्म की पालिका स्त्री है एवं उसका एकमात्र धर्म पति की सेवा करना ही है।

भारतीय साहित्य में नीति का प्रयोग अति प्राचीनकाल से होता रहा है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि जीवन का सम्पूर्ण विकास किसी न किसी नीति का ही परिणाम है। मानस में भी नीति का महत्वपूर्ण स्थान है। राम का बनवास जाना, दशरथ का प्राण त्याग का कारण, उनका सत्य पर अविचलित होकर टिके रहना ही है। तुलसीदास ने सत्य पर विशेष बल दिया है एवं अहिंसा को परम धर्म स्वीकार करते हैं। मानस में पारिवारिक नीति के माध्यम से माता–पिता के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही भ्रात सम्बन्धी नीति का भी उल्लेख तुलसी काव्य में हुआ है। निष्कर्षतः हम कह सकते है कि तुलसी काव्य में धर्म और नीति का विविध रूप में चित्रण किया गया है, जो व्यवहारिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तुलसी काव्य में सामाजिक व्यवस्था का विषद वर्णन देखने को मिलता है। तुलसी ने अपने काव्य में सामाजिक व्यवस्था के विभिन्न तत्वों यथा सामाजिक वर्ग, पारिवारिक जीवन, स्त्री–पुरूष संबंध, वैवाहिक पद्वति, वेशभूषा, खान–पान आदि का वर्णन किया है। तुलसीदास के काव्यमयी रचनाओं में

पारिवारिक जीवन की स्पष्ट झलक मिलती है। तुलसी काव्य के अनुशीलन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने भारतीय पारिवारिक जीवन को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। पारिवारिक जीवन में सुचारूता स्थापित करने के लिए तुलसीदास स्त्री–पुरूष के मूल में श्रृद्धा–विश्वास की भावना प्रकट करने की चेष्टा करते हैं। तुलसी की यह धारणा रही है कि स्त्री को सदैव पतिव्रता का पालन करना चाहिए। साथ ही पति के लिए भी तद्भाव भक्ति नीति के ही पक्षपाती हैं। जातकर्म संस्कार के बाद दूसरा महत्वपूर्ण संस्कार विवाह है,क्योंकि इसके सम्पन्न हुए बिना कोई भी व्यक्ति न तो समाज के लिए प्रतिष्ठित समझा जाता है और न ही उपयोगी। तुलसी ने शिव–पावर्ती के विवाह का वर्णन रामचरित्रमानस एवं पावर्ती मंगल में किया है। इसमें लग्न, लग्नपत्रिका, बारात, अगवानी, जनवास, गारी, पूजन, कन्यादान आदि का उल्लेख हुआ है, जो आज भी भारतीय समाज में प्रचलित है। इसके साथ ही तुलसी काव्य में तत्कालीन स्त्री–पुरूष के परिधानों का भी उल्लेख मिलता है। काव्य में राम विवाह के अवसर पर सीता जी की सुन्दर साड़ी का उल्लेख हुआ है, जिसका रंग लाल है इसके साथ ही राम–लक्ष्मण की वेशभूषा का भी वर्णन मिलता है। काव्य में आचार–विचार, खान–पान, आवास अतिथि सत्कार, शिक्षा आदि का भी उल्लेख मलता है। इस काल में शास्त्रविहित एवं लोक–परंपरागत संस्कारों के अतिरिक्त समाज में कुछ विशिष्ट लोक प्रथाओं एवं नीतियों जैसे मौज, गौना, सौलह संस्कार, सती प्रथा, जौहर प्रथा आदि प्रचलित थी। विवेच्य काल का भारतीय समाज साधारणतया दो भागों में विभक्त था भारतीय धर्म और संस्कृति का अनुयायी तथा विदेशी धर्म और संस्कृति पर आधारित। समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी परन्तु शिथिल हो चुकी थी, जिसका मुख्य कारण मुसलमानों का प्रभाव था। तुलसी वर्ण व्यवस्था के समान आश्रम–व्यवस्था के प्रति भी गहरी

आस्था व्यक्त करते हैं और आश्रमहीन समाज को आश्रमानुकूल देखना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने रामराज्य और कलियुग का आदर्श प्रस्तुत किया है। विवेच्य साहित्य में प्रतिपादित तत्कालीन नारी की सामाजिक स्थिति ज्यादा अच्छी प्रतीत नहीं होती। पुरूष समाज में अनैतिकता का जोर था। स्त्री जाति का सम्मान और स्वाभिमान कुचल दिया गया था और उसे भोग–विलास की उपकरण मात्र समझा जाने लगा था।

प्रागैतिहासिक काल से भारतीय संस्कृति अविरल धारा के समान प्रवाहमान है और विवेच्यकाल की सांस्कृतिक विचारधारा उसी का विकसित रूप है। मुस्लिम सभ्यता एवं संस्कृति ने देश की राजनैतिक अवस्था को बिल्कुल बदल दिया और समाज पर भी उसका गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके कारण परम्परागत भारतीय संस्कृति को गहरा धक्का लगा। संस्कृति एवं समाज के एक सिक्के के दो पहलू हैं एवं संस्कृति के विकास में आदान–प्रदान का भाव निहित होता है। गोस्वामी तुलसीदास अपने काव्य में भारतीय संस्कृति का विशुद्ध उल्लेख करते हैं। गोस्वामी जी ने तत्कालीन भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अन्तर्गत 'रामचरित्रमानस' की रचना करके भारतीय संस्कृति की रक्षा की। तुलसी की मान्यता थी कि समाप्ति की इकाई व्यस्टि जब तक धर्मनिष्ठ और नैतिक नहीं बनता, तब तक समाज की सुखमयता एंव समृद्धिशीलता सम्भव नहीं है। तुलसीदास जी का मत था कि समाज में बड़ों का आदर, विद्वानों का सम्मान तथा वीरों के प्रति श्रृद्धा सदैव बनी रहनी चाहिए। महाकवि ने अपने महाकाव्य में जिस संस्कृति की व्याख्या की है वह आदमी को मंझधार में अकेला नहीं छोड़ती।

हम कह सकते हैं कि तुलसी के काव्य में तत्कालीन भारत की स्थिति का वर्णन ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। गोस्वामी जी के

काव्य में तत्कालीन राजैनतिक स्थिति, सांस्कृतिक स्थिति सामाजिक स्थिति आदि का वर्णन मिलता है। यद्यपि तुलसी का अकबर के साथ कोई परिचय नहीं था, और उन जैसे सन्त को बादशाह के सम्पर्क व सरंक्षण की काई आवश्यकता भी नहीं थी, तथापि इस युग के अनेक प्रतिष्ठित व समर्थ पुरूषों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हुआ, जिनमें अब्दुर्रहीम खानखाना और राजा मान सिंह के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। अब्दुर्रहीम खानखाना की उनकी समय–समय पर दोहो में लिखी–पढ़ी (पत्राचार) होती रहती थी, और इसके प्रति वे बहुत आदर का भाव रखते थे। तुलसी काव्य ग्रन्थ राजाओं के महल से लेकर गरीबों की झोपड़ी तक समान आदर प्राप्त है। जो तत्कालीन भारतीय इतिहास को उजागर करने का एक अत्यन्त उपयोगी साधन बन गया है। वस्तुतः तुलसी काव्य में भारतीय इतिहास का चित्रण किया गया है। अत्यन्त स्वाभाविक रूप में हुआ है। इस प्रकार महाकवि तुलसी का काव्य भारतीय इतिहास जानने का एक सशक्त साधन माना जा सकता है।

*****